पु●ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Grade -VI

Sanskrit

Specimen Copy

Aug & Sept

Year- 2021-22

अनुक्रमणिका

	SA-1 chapter – (1 to 8)

NO	TITLE	PAGE-NO
पञ्चमःपाठः	वृक्षाः	
षष्ठःपाठः	समुद्रतटः	
सप्तमःपाठः	बकस्य प्रतीकारः	
अष्टमःपाठः	सूक्तिस्तबकः	

पञ्चमःपाठः - वृक्षाः

➢ कठिन शब्दार्थाः

- किमपि - कुछ-कुछ
- पादैः - पैरों से
- पातालं - जमीनकेनीचे भाग
- सन्ततम - लगातार
- नभ - आकाशको

➢ शब्दार्थाः

- साधुजनाः-इव - सज्जनों केभाँति
- शिरस्सु - सिरों पर
- वहन्ति - ढोते
- विहगाः - पक्षी
- शाखादोलासीनाः - शाखा रुपी झूले पर बैठे हुए

भाषान्तर-

1. वृक्षाः वने वने निवसन्तोः| वृक्षाः वनम् वनम् रचयन्ति वृक्षा।|

1. वृक्ष प्रत्येक वन में निवास करते/रहते हैं, इस प्रकार वृक्ष कई जंगल बनाते रहते हैं।

2 शाखादोलासीन (सन्ति) विहगाः, तैः किम् अपि कूजन्ति वृक्षाः ।

2. पक्षी शाखा रूपी झूले पर बैठे हैं मानों वृक्ष उनके माध्यम से कुछ-कुछ कूक रहे हैं अर्थात् कह रहे हैं।

3-पिबन्ति पवनं जलं संततं |साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ||

3 वृक्ष हमेशा वायु और जल पीते हैं। सभी वृक्ष सज्जनों की भाँति होते हैं। अर्थात् वे सज्जनों के समान हमारा उपकार करते है |

4. स्पृशन्ति पादे : पातालं च| नभः शिरस्सू वहन्ति वृषाः ||

4-वृक्ष पैरों से (जड़ों से) पाताल को छूते हैं और सिरों पर आकाश को ढोते हैं। अर्थात् वे महान हैं और अत्यधिक कार्यभार संभालते हैं

5-पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम्, कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ।

5. वृक्ष जलरूपी आईने में अपना प्रतिबिम्ब आश्चर्य/कौतूहल से देखते हैं।

6. प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् , कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ।

6. वृक्ष छाया रूपी अपन बिछौने को फैलाकर अर्थात् बिछाकर (सबका) आदर-सत्कार करते हैं।

अभ्यासः

प्र- 1-वचनानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	वनम्	वने	वनानि
	जलम्	जले	जलानि
	बिम्बम्	बिम्बे	बिम्बानि
यथा-	वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्
	पवनम्	पवनौ	पवनान्
	जनम्	जनौ	जनान्

प्र- 2-कोष्ठकेषु प्रदत्तशब्देषु उपयुक्तविभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) त्वं जलं पिबसि। (जल)
(ख) छात्रः दूरदर्शनं पश्यति। (दूरदर्शन)
(ग) वृक्षाः पवनं पिबन्ति। (पवन)
(घ) ताः कथां लिखन्ति। (कथा)
(ङ) आवाम् जन्तुशालां गच्छावः। (जन्तुशाला)

➢ साहित्य

प्र- 3 अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदानि चिनुत-

(क) वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति। - वृक्षाः
(ख) विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति। - विहगाः
(ग) पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति। - वृक्षाः
(घ) कृषकः अन्नानि उत्पादयति। - कृषकः
(ङ) सरोवरे मत्स्याः सन्ति। - मत्स्याः

प्र- 4-प्रश्नानामुत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) वृक्षाः कैः पातालं स्पृश्यन्ति?

उत्तर – वृक्षाः पादैः पातालं स्पृश्यन्ति।

(ख) वृक्षाः किं रचयन्ति?

उत्तर वृक्षाः वनम् रचयन्ति।

(ग) विहगाः कुत्र आसीनाः।

उत्तर विहगाः शाखादोला आसीनाः।

(घ) कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति?

उत्तर कौतुकेन वृक्षाः पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् पश्यन्ति।

➢ व्याकरण

प्र– 5–समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
प्रथमा	अश्वः	अश्वौ	अश्वाः
द्वितीया	सूर्यम्	सूर्यौ	सूर्यान्
	चंद्रम्	चंद्रौ	चन्द्रान्
तृतीया	विडालेन	विडालाभ्याम्	विडालैः
	मण्डूकेन	मण्डूकाभ्याम्	मण्डकैः
चतुर्थी	सर्पाय	सर्पाभ्याम्	सर्पेभ्यः
	वानराय	वानराभ्याम्	वानरेभ्यः
पञ्चमी	मोदकात्	मोदकाभ्याम्	मोदकेभ्यः
	वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
षष्ठी	जनस्य	जनयोः	जनानाम्
	शुकस्य	शुकयोः	शुकानाम्
सप्तमी	शिक्षके	शिक्षकयोः	शिक्षकेषु
	मयूरे	मयूरयोः	मयूरेषु
सम्बोधनम्	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!
	नर्तक!	हे नर्तकौ!	हे नर्तकाः!

प्र- ६-भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

(क) गङ्गा, लता, यमुना, नर्मदा। - लता

(ख) उद्यानम्, कुसुमम्, फलम्, चित्रम्। - चित्रम्

(ग) लेखनी, तूलिका, चटका, पाठशाला। - चटका

(घ) आम्रम्, कदलीफलम्, मोदकम्, नारङ्गम्। - मोदकम्

षष्ठःपाठः समुद्र तटः

➢ कठिनशब्दार्थाः

- केचन - कुछ
- तरङ्गै - लहरों से
- बालुकाभिः - रेत से
- बालुकागृहम - रेत के धर
- अतीव - बहुतज़्यादा
- भारतस्य - भारत का, के, की

➢ शब्दार्थाः

- जलविहारम - पानी में घूमना
- मत्स्यजीविनः - मछुआरे
- प्रचलति एव - चलता ही रहता हैं
- विदेशिपर्यटकेभ्यः - विदेशी सैलानियों के लिए
- स्वैरं - अपनी इच्छानुसार
- वैदेशिका व्यापाराय - विदेशीव्यापारके लिए
- तिसृषृदिशासु - तीनों दिशाओं में
- इति - ऐसा
- एतेषां त्रयाणाम - इन तीनों का

अभ्यासः

➢ वांचन-कार्य

प्र- 1-उच्चारणं कुरुत-

- तरङ्गैः
- मत्स्यजीविनः
- सङ्गमः
- प्रायद्वीपः
- तिसृषु
- विदेशिपर्यकेभ्यः
- चन्द्रोदयः
- बङ्गोसागरः

भाषान्तर-

क-एषः----------चालयन्ति।
यह समुद्र तट है। यहाँ लोग पर्यटन के लिए आते है। कुछ लहरों से क्रीदा करते हैं। कुछ नौकाओं दवारा जल विहार करते हैं। उनमें कुछ गेंद से खेलते हैं। लड़कियाँ और लड़के रेत से रेत के गर घर बनाते हैं। बीच-बीच में लहरें तट का घर बहा ले जाती हैं। यह खेल चलता ही रहता है। समुद्र तट केवल पर्यटन-स्थल नही ।यहाँ मछुआरे भी अपनी आजीविका चलाते हैं।

ख-अस्माकं ----------दीर्घतम।
हमारे देश में बहुत से समुद्रतट है।इनमें मुम्बई ,गोवा, कोच्चि, कन्याकुमारी, विशाखापत्तनम तथा पुरी का तट बहुत प्रसिद्ध है।गोवा का तट विदेशी पर्यटकों को बहुत ज्यादा पसंद है। विशाखापत्तनम का तट विदेशी व्यापार के लिए प्रसिदध है।कोच्चि का तट नारियल के लिए जाना जाता है। मुम्बई नगर के जुहू तट पर सब लोग अपनी इच्छानुसार विहार करते हैं। चेन्नई का मेरीना तट देश के सभी तटों में सबसे लंबा है।

ग-भारतस्य----------शक्यते।
भारत की तीनों दिशाओं में समुद्रतट हैं।इसी कारण से भारत देश को प्रायदवीप भी कहा जाता है।पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण दिशा में हिंद महासागर और पश्चिम दिशा में अरब सागर है। इन तीनों सागरों का संगम कन्याकुमारी के तट पर होता है । यहाँ पूर्णिमा के अवसर पर चन्द्रोदय और सूर्यास्त एक साथ देखा जा सकता है।

- **साहित्य**

प्र- 2-अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत-

(क)जनाः काभिः जलविहारं कुर्वन्ति?

उत्तर जनाः नौकाभिः जलविहारं कुर्वन्ति।

(ख) भारतस्य दीर्घतमः समुद्रतटः कः?

उत्तर भारतस्य दीर्घतमः समुद्रतटः चेन्नईनगरस्य मेरीनातटः अस्ति।

(ग) जनाः कुत्र स्वैरं विहरन्ति?

उत्तर जनाः मुंबईनगरस्य जुहूतटे स्वैरं विहरन्ति।

(घ) बालकाः बालुकाभिः किं रचयन्ति?

उत्तर बालकाः बालुकाभिः बालुकागृहं रचयन्ति।

(ङ) कोच्चितटः केभ्यः ज्ञायते?

उत्तर– कोच्चितटः नारिकेलफलेभ्यः ज्ञायते।

प्र– 3–मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

बङ्गोपसागरः	प्रायद्वीपः	पर्यटनाय	क्रीडा	सङ्गमः

(क) कन्याकुमारीतटे त्रयाणां सागराणां सङ्गमः भवति।

(ख) भारतदेशः प्रायद्वीपः इति कथ्यते।

(ग) जनाः समुद्रतटं पर्यटनाय आगच्छन्ति।

(घ) बालेभ्यः क्रीडा रोचते।

(ङ) भारतस्य पूर्वदिशायां बङ्गोपसागरः अस्ति।

प्र– 4–यथायोग्यं योजयत-

1- समुद्रतटः	-पर्यटनाय
2- क्रीडनकम्	-खेलनाय
3- दुग्धम्	-पोषणाय
4- दीपकः	-प्रकाशाय
5- विद्या	-ज्ञानाय

प्र– 5–तृतीयाविभक्तिप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- व्योमः मित्रेण सह गच्छति। (मित्र)

(क) बालकाः बालिकाभिः सह पठन्ति। (बालिका)

(ख) तडागः कमलैः विभाति। (कमल)

(ग) अहमपि कन्दुकेन खेलामि। (कन्दुक)

(घ) अश्वाः अश्वैः सह धावन्ति। (अश्व)

(ङ) मृगाः मृगैः सह चरन्ति। (मृग)

रचनात्मक-कार्यम

प्र- 6-अधोलिखितं वृत्तचित्रं पश्यत। उदाहरणानुसारेण कोष्ठकगतैः शब्दैः उचितवाक्यानि रचयत।

1. रहीमः मित्रेण सह क्रीडति।
2. रहीमः द्विचक्रिकया आपणं गच्छति।
3. रहीमः कलमेन पत्रं लिखति।
4. रहीमः हस्तेन कन्दुकं क्षिपति।
5. रहीमः नौकाया जलविहारं करोति।
6. रहीमः चषकेन जलं पिबति।
7. रहीमः तूलिकया चित्रं रचयति।
8. रहीमः वायुयानेन ह्यः आगच्छत्।

प्र- 7-कोष्ठकाते उचितपदप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) धनिक <u>निर्धनाय</u> धनं ददाति। (निर्धनम्/निर्धनाय)

(ख) बालः <u>पठनाय</u> विद्यालयं गच्छति। (पठनाय/पठनेन)

(ग) सज्जनाः <u>परोपकाराय</u> जीवन्ति। (परोपकारम्/परोपकाराय)

(घ) प्रधानाचार्यः <u>छात्रेभ्यः</u> पारितोषिकं यच्छति। (छात्राणाम्/छात्रेभ्यः)

(ङ) शिक्षकाय नमः। (शिक्षकाय/शिक्षकम्)

➢ प्रवृत्ति

संस्कृत में पञ्च समुद्रः नामानि लिखत-

सप्तमःपाठः बकस्य प्रतीकारः

➢ कठिन शब्दार्थाः

- शृगालः - सियार, गीदड़
- श्वः - आनेवाला कल
- मेरे सह - मेरे साथ
- तयो - उन दोनों में
- सुखैषिणा - सुखचाहने वाले

➢ शब्दार्थाः

- सदव्यवहर्तव्यम - अच्छा व्यवहार करना चाहिए
- तस्मात - इसलिए
- सङ्कीर्णमुखेकलशे - तंगमुख वाले कलश में
- आत्मदुर्वव्यवहारस्य - अपने बुरे व्यवहारका
- यादृशम व्यवहारम - जैसा व्यवहार
- वञ्चितः - ठगागया

- **चिंतयित्वा – सोच समझकर**

• बकस्य प्रतिकारः Summary

- प्रस्तुत पाठ में अव्ययों के प्रयोग को कथा के माध्यम से दिखलाया गया है। गीदड़ और बगुला दो मित्र थे। दोनों मित्र एक वन में रहते थे। एक बार प्रातः गीदड़ ने बगुले से कहा-'दोस्त, कल तुम मेरे साथ भोजन करो।' गीदड़ का न्यौता पाकर बगुला प्रसन्न हुआ।

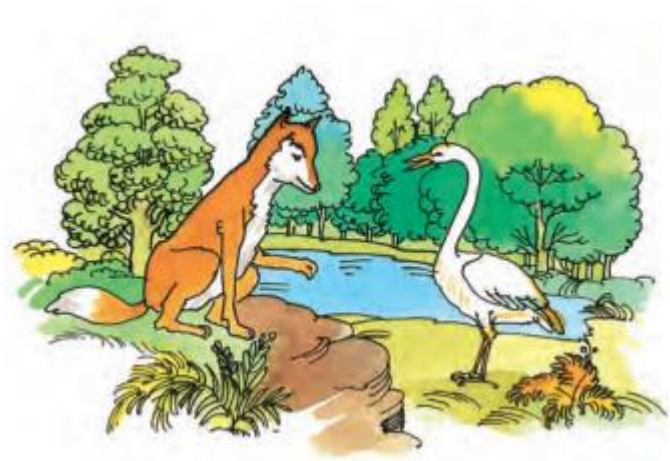

- अगले दिन वह बगुला गीदड़ के निवास पर गया। गीदड़ कुटिल स्वभाव का था। उसने बगुले को एक थाली में खीर प्रदान की। गीदड़ बोला-'दोस्त, इस पात्र में हम दोनों अब एक साथ खाते हैं।' भोजन करते समय बगुले की चोंच थाली से भोजन लेने में समर्थ नहीं थी। इसलिए बगुला केवल खीर को देखता रहा। किन्तु गीदड़ सारी खीर खा गया। गीदड़ से ठगा गया बगुला सोचने लगा-जैसा व्यवहार इस गीदड़ ने मेरे साथ किया है वैसा मैं भी इसके साथ करूँगा। ऐसा सोचकर उसने गीदड़ से कहा-'मित्र, तुम भी कल शाम को मेरे साथ भोजन करोगे। बगुले के निमन्त्रण से गीदड़ प्रसन्न हुआ।'

- जब गीदड़ शाम को बगुले के निवास पर भोजन के लिए गया तब बगुले ने एक तंग मुँह के कलश में खीर प्रदान की और गीदड़ से कहने लगा-'मित्र, हम दोनों साथ ही इस पात्र में भोजन करते हैं।' बगुला कलश से चोंच के द्वारा खीर खाता है परन्तु गीदड़ का मुख कलश में प्रवेश नहीं करता। इसलिए बगुला सारी खीर खा लेता है और

गीदड़ ईर्ष्यापूर्वक उसे देखता रहता है। शिक्षा-दुर्व्यवहार का फल दुःखदायक होता है। अतः सुख चाहने वाले मनुष्य को अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

- बकस्य प्रतिकारः **Word Meanings Translation in Hindi**
- (क) एकस्मिन् वने शृगालः बकः च निवसतः स्म। तयोः मित्रता आसीत्। एकदा प्रातः शृगालः बकम् अवदत्-"मित्र! श्वः त्वं मया सह भोजनं कुरु।" शृगालस्य निमंत्रणेन बकः प्रसन्नः अभवत्।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) : एकस्मिन् वने-एक वन में (in a forest), शृगालः-गीदड़ सियार (jackal), बकः च-और बगुला (and a crane), निवसतः स्म-रहते थे lived (dual), तयोः-उन दोनों में (between them), आसीत्-था/थी (was), एकदा-एक बार (once), अवदत्-बोला (spoke/said), श्वः-आने वाला कल (tomorrow), मया सह-मेरे साथ (with me), भोजनं कुरु-भोजन करो (have dinner/meals), निमंत्रणेन-निमंत्रण से with (his) invitation, अभवत्-हुआ (became/was)
- सरलार्थ :
  एक वन में एक सियार और एक बगुला रहते थे। उन दोनों में मित्रता (दोस्ती) थी। एक दिन सवेरे सियार ने बगुले को कहा-"मित्र! कल तुम मेरे साथ खाना खाओ।" सियार के निमंत्रण से बगुला खुश हुआ।
- (ख) अग्रिमे दिने सः भोजनाय शृगालस्य निवासम् अगच्छत्। कुटिलस्वभावः शृगालः स्थाल्यां काय क्षीरोदनम् अयच्छत्। बकम् अवदत् च-"मित्र! अस्मिन् पात्रे आवाम् अधुना सहैव खादावः।" भोजनकाले बकस्य चञ्चुः स्थालीतः भोजनग्रहणे समर्था न अभवत्। अतः बकः केवलं क्षीरोदनम् अपश्यत्। शृगालः तु सर्वं क्षीरोदनम् अभक्षयत्।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :
  अग्रिम दिवसे-अगले दिन (the next day), भोजनाय-भोजन के लिए (for dinner), निवासम्-निवास स्थान को (his residence), अगच्छत्-गया/गई (went), स्थाल्याम्-थाली में (in a dish), बकाय-बगुले के लिए, (for crane), क्षीरोदनम्-खीर (A sweet dish prepared with milk, rice, sugar etc.), अयच्छत्-दिया (to give), पात्रे-बर्तन में (in the vessel), अधुना-अब (now), सहैव (सह + एव)-साथ ही (together), बकस्य चञ्चुः-बगुले की चोंच (the crane's beak), स्थालीतः-थाली से (from the dish), भोजनग्रहणे- भोजन ग्रहण करने में (to have dinner), समर्था-समर्थ (capable),

अतः-इसलिए (therefore), केवलम्-केवल/सिर्फ़ (only), अपश्यत्-देखा/देखी (saw), अभक्षयत्-खाया। खायी (ate)

- सरलार्थः
  अगले दिन वह भोजन के लिए सियार के निवास स्थान पर गया। कुटिल स्वभाव वाले सियार ने थाली में बगुले को खीर दी और बगुले से कहा-"मित्र, इस बर्तन में हम दोनों अब साथ ही खाते हैं।" भोजन के समय में बगुले की चोंच थाली से भोजन ग्रहण करने में समर्थ नहीं थी। अतः बगुला केवल खीर देखता रहा। सियार ने तो सारी खीर खा ली।
- (ग) शगालेन वञ्चितः बकः अचिन्तयत्-"यथा अनेन मया सह व्यवहारः कृतः तथा अहम् अपि तेन सह व्यवहरिष्यामि।" एवं चिंतयित्वा सः शृगालम् अवदत्- "मित्र! त्वम् अपि श्वः सायं मया सह भोजनं करिष्यसि।" बकस्य निमंत्रणेन शृगालः प्रसन्नः अभवत्।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :
  शृगालेन-सियार द्वारा (by the jackal), वञ्चितः-ठगा गया . (deceived), अचिंतयंत्-सोचा (thought), यथा-जिस प्रकार (the way/like), अनेन-इसके द्वारा by this (jackal), व्यवहारः-व्यवहार (treatment, behaviour), कृतः-किया गया (has been done), तथा-उसी प्रकार (like that), अपि-भी (also/ too), तेन सह-उसके साथ (with him), व्यवहरिष्यामि-व्यवहार करूँगा (shall behave), एवम्-इस प्रकार (thus), चिंतयित्वा-सोच-समझकर (thinking properly), करिष्यसि-करोगे (will do)। .
- सरलार्थ : सियार के द्वारा ठगे जाने पर बगुले ने सोचा, "जिस प्रकार इसने मेरे साथ बर्ताव किया है, उसी प्रकार मैं भी उसके साथ बर्ताव करूँगा।" ऐसा सोचकर उसने सियार से कहा-"दोस्त! तुम भी कल शाम मेरे साथ भोजन करोगे।" बगुले के निमंत्रण से सियार खुश हो गया।
- (घ) यदा शृगालः सायं बकस्य निवासं भोजनाय अगच्छत्, तदा बकः सङ्कीर्णमुखे कलशे क्षीरोदनम् अयच्छत् शृगालं च अवदत्-"मित्र! आवाम् अस्मिन् पात्रे सहैव भोजनं कुर्वः"। बकः कलशात् चञ्च्या क्षीरोदनम् अखादत्। परंतु शृगालस्य मुखं कलशे न प्राविशत्। अतः बकः सर्वं क्षीरोदनम् अखादत्। शृगालः च केवलम् ईर्ष्या अपश्यत्।
- शब्दार्थाः (Word Meanings): यदा-जब (when), तदा-तब (then), सङ्कीर्णमुखे कलशे-तंग मुख वाले कलश में (in a pot with a narrow mouth), कुर्वः-(हम दोनों) करते हैं (we/both do), कलशात्-कलश से (from the pot), चञ्च्वा -चोंच से (with beak), प्राविशत्-प्रवेश किया (entered), ईर्ष्णया-ईर्ष्या से (jealously), अपश्यत्-देखा (saw)।
- सरलार्थ :
  जब सियार शाम को बगुले के निवास स्थान पर भोजन के लिए गया, तब बगुले ने छोटे मुख वाले कलश (सुराही) में खीर डाली (दी) और सियार से कहा-"दोस्त, हम

दोनों इसी बर्तन में साथ ही भोजन करते हैं।" बगुले ने कलश से चोंच द्वारा खीर खाई। परंतु सियार का मुँह कलश में नहीं जा सका। इसलिए बगुला सारी खीर खा गया। सियार केवल ईर्ष्या से देखता रहा।

- (ङ) शृगालः बकं प्रति यादृशं व्यवहारम् अकरोत् बकः अपि शृगालं प्रति तादृशं व्यवहारं कृत्वा प्रतीकारम् अकरोत्।
- उक्तमपि- आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं भवति दुःखदम्।
  तस्मात् सद्व्यवहर्तव्यं मानवेन सुखैषिणा॥
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :
  यादृशम् व्यवहारम्-जैसा व्यवहार (kind of behaviour), तादृशम्-वैसा (the same), कृत्वा-करके (having done), प्रतीकारम्-बदला (revenge), अकरोत्-किया (did), आत्मदुर्वव्यवहारस्य-अपने बुरे व्यवहार का (fall out of bad behaviour), फलम्-फल/परिणाम (result/fall out), दुःखद-दुखद/दुख देने वाला (causing misery), तस्मात्-इसलिए (therefore), सद्व्यवहर्तव्यम्-अच्छा व्यवहार करना चाहिए (should put on (do) good behaviour), मानवेन-मनुष्य द्वारा (by a person), सुखैपिणा-सुख चाहने वाले (wishing for happiness)।
- सरलार्थः
  सियार ने बगुले के प्रति जिस प्रकार का व्यवहार किया बगुले ने भी सियार के साथ वैसा ही व्यवहार करके बदला लिया। कहा भी गया है अपने बुरे व्यवहार का परिणाम दुखद ही होता है। इस कारण सुख चाहने वाले मानव को चाहिए कि वह सदा अच्छा व्यवहार करे।

अभ्यासः

➢ वांचन-कार्यम

प्र-1-उच्चारणं कुरुत-

- यत्र
- तत्र
- यदा
- तदा
- अधूना
- अपि
- अद्य
- श्वः
- प्रातः
- अन्यत्र
- सायम
- कुतः

प्र–2–मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

अद्य अपि प्रातः कदा सर्वदा अधुना

(क) प्रातः भ्रमणं स्वास्थ्याय भवति।
(ख) सर्वदा सत्यं वद।s
(ग) त्वं कदा मातुलगृहं गमिष्यसि?
(घ) दिनेशः विद्यालयं गच्छति, अहम् अपि तेन सह गच्छामि।
(ङ) अधुना विज्ञानस्य युगः अस्ति।
(च) अद्य रविवासरः अस्ति।

➢ साहित्य

प्र–3–अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत-

(क) शृगालस्य मित्रं कः आसीत्?
उत्तर–शृगालस्य मित्रं बकः आसीत्।

(ख) स्थालीतः कः भोजनं न अखादत्?
उत्तर–स्थालीतः बकः भोजनं न अखादत्।

(ग) बकः शृगालाय भोजने किम् अयच्छत्?
उत्तर–बकः शृगालाय भोजने संकीर्णमुखे कलशे क्षीरोदनम् अयच्छत्।

(घ) शृगालस्य स्वभावः कीदृशः भवति?
उत्तर–शृगालस्य स्वभावः कुटिलस्वभावः भवति।

➢ व्याकरण

प्र–4–पाठात् पदानि चित्वा अधोलिखितानां विलोमपदानि लिखत-

यथा - शत्रुः - मित्रम्

- सुखदम् दुखदम्
- दुर्व्यवहारः सद्व्यवहारः
- शत्रुता मित्रता
- सायम् प्रातः
- अप्रसन्नः प्रसन्नः
- असमर्थः समर्थ

➢ रचनात्मक-कार्यम

प्र-5-मञ्जूषातः समुचितपदानि चित्वा कथां पूरयत-

मनोरथैः , पिपासितः , उपायम् , स्वल्पम्, पाषाणस्य, कार्याणि , उपरि, सन्तुष्टः, सन्तुष्टः, पातुम् ,इतस्ततः , कुत्रापि

एकदा एकः काकः पिपासितः आसीत्। सः जलं पातुम् इतस्ततः अभ्रमत्। परं कुत्राणि जलं न प्राप्नोत। अन्ते सः एकं घटम् अपश्यत्। घटे स्वल्पम् जलम् आसीत्। अतः सः जलम् पातुम् असमर्थः अभवत्। सः एकम् उपायम् अचिन्तयत्। सः पाषाणस्य खण्डानि घटे अक्षिपत्। एवं क्रमेण घटस्य जलम् उपरि आगच्छत्। काकः जलं पीत्वा संतुष्टः अभवत्। परिश्रमेण एव कार्याणि सिध्यन्ति न तु मनोरथैः।

प्र-6-तत्समशब्दान् लिखत-

सियार	<u>शृगालः</u>
कौआ	<u>काकः</u>
मक्खी	<u>मक्षिकाः</u>
बन्दर	<u>वानरः</u>
बगुला	<u>बकः</u>
चोंच	<u>चञ्चुः</u>
नाक	<u>नासिकाः</u>

अष्टमःपाठः सूक्तिस्तबकः

➢ कठिन शब्दार्थाः

मनोरथः - इच्छाओं से

- उद्यमेन - परिश्रम से
- सार्थकः - अर्थपूर्ण
- हि - निश्चय से
- तुष्यन्ति - खुश होते हैं

तस्मात - इस कारण

दरिद्रता - कंजूसी

अगच्छन - न जाता हुआ

➢ शब्दार्थाः

- प्रियवाक्येनप्रदानेन - प्रिय वचनबोलने से
- पदमेकम - एक कदम
- पिककाकयोः - कोयल और कौवे के मध्य
- वसन्तसमये प्राप्ते - वसन्तकाल आने पर
- भेदः - अंतर

सूक्तिस्तबकः **Word Meanings Translation in Hindi**

(क) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
उद्यमेन-परिश्रम से (by hard work), हि-निश्चय से (निश्चित ही) (surely), सिध्यन्ति-सफल होते हैं (be successful), कार्याणि-काम (work), मनोरथैः-इच्छाओं से (desire only by desiring), सुप्तस्थ-सोए हुए (के) (Sleeping), सिंहस्थ-शेर के (Lion's), प्रविशन्ति-प्रवेश करते हैं (to enter), मुखे-मुँह में (in lion's mouth), मृगाः-हिरण (deer)।

अन्वयः (Prose-order)
कार्याणि उद्यमने हि सिध्यन्ति मनोरथैः न, सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः न हि प्रविशन्ति। सरलार्थः परिश्रम से ही काम सफल होते हैं केवल इच्छाएँ करने से नहीं! (जैसे) सोए हुए शेर के मुँह में हिरण खुद ही नहीं प्रवेश करते (घुसते) हैं। भावः मनुष्य सहित सभी जीव-जन्तुओं को अपने काम का सफल करने के लिए प्रयत्न करना ही पड़ता है।

(ख) पुस्तके पठितः पाठः जीवने नैव साधितः।
किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न सार्थकः॥

शब्दार्थाः (Word Meanings):
पुस्तके-पुस्तक में (in the book), पठितः-पढ़ा गया, (that is read), जीवने-जीवन में (in life), नैव (न+ एव)-नहीं (not), साधितः-अपनाया/ उपयोग किया गया (practised/used), किं भवेत्-क्या लाभ (what is the use), यो न (यः न) – जो नहीं (which is not), सार्थकः-अर्थपूर्ण (meaningful)

अन्वयः (Prose-order) (यदि) पुस्तके पठितः पाठः जीवने न साधितः (तर्हि) यः (पाठः) जीवने सार्थकः न (अस्ति) तेन पाठेन किं भवेत्। सरलार्थ : (यदि) पुस्तक में पढ़ा गया पाठ जीवन में उपयोग में नहीं लाया गया तो जो (पाठ) जीवन में सार्थक नहीं उस पाठ से क्या लाभ? भाव : पुस्तक में पढ़ी हुई बातों को जीवन में अवश्य अपनाना चाहिए।.

(ग) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवाः।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
प्रियवाक्यप्रदानेन-प्रिय वचन बोलने से (by speaking pleasant words), तुष्यन्ति-खुश होते हैं (become happy/satisfied), तस्मात्-इस कारण से (hence), वक्तव्यम्-बोलना चाहिए (should speak), वचने-बोलने में in speech, का दरिद्रता-कंजूसी/कृपणता क्यों हो (why be miserly)।

अन्वयः (Prose-order):
सर्वे मानवाः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति; तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यम्; वचने का दरिद्रता (स्यात्)।
सरलार्थ : सब मनुष्य प्रिय वचन कहे जाने पर प्रसन्न हो जाते हैं। इस कारण मधुर वचन ही बोलने चाहिए। वाणी के उपयोग में कंजूसी क्यों की जाए। अर्थात् उदार होकर अधिकाधिक मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। भावः मीठे बोल सबको प्रसन्न रखने का एकमात्र सरल साधन है।

(घ) गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
गच्छन्-चलता हुआ (roaming, moving), पिपीलकः-चींटी (नर) ant (he), याति-जाता/जाती है (goes), योजनानां- योजनों का (दूरी का एक माप) (of many yojanas', measure of distance equal to 12 kms), शतानि अपि-कई सौ (hundreds), अगच्छन् (न गच्छन्)-न जाता हुआ (one not on the move),वैनतेयः-गरुड़ पक्षी (Garuda the bird that fies very swiftly), पदमेकम् (पदम् + एकम्)- एक कदम (a single step)।

अन्वयः (Prose-order):
गच्छन् पिपीलकः योजनानां शतानि अपि याति; अगच्छन् वैनतेयः अपि एकं पदं न गच्छति।
सरलार्थ : चलती हुई चींटी तो सैकड़ों योजन की दूरी लाँघ जाती है किंतु न चलता हुआ गरुड़ भी एक कदम भी नहीं जाता अर्थात् आगे नहीं बढ़ता। भावः प्रयास करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं अन्यथा नहीं।

(ङ) काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसंतसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

शब्दार्थाः (Word Meanings):
काकः-कौवा (crow), कृष्णः-काला (black), पिकः-कोयल (cuckoo), भेदः-अंतर (difference), पिककाकयोः-कोयल और कौवे के मध्य (between the crow and the cuckoo), वसन्तसमये प्राप्ते-वसन्त काल आने पर (on arrival of spring time)।

अन्वयः (Prose-order) :
काकः, कृष्णः, पिकः (अपि) कृष्णः (अस्ति), पिककाकयोः कः भेदः (अस्ति) वसंतमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः (इति भेदः स्पष्टः भवति) सरलार्थः कौआ काला होता है, कोयल भी काली होती है, कौए और कोयल में क्या अंतर है? वसंतकाल आने पर कौवा कौवा है और कोयल कोयल है। (यह बात स्पष्ट हो जाती है।) भावः वाह्य आकार के आधार पर आंतरिक गुणों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, किंतु समय आने पर आंतरिक गुण भी प्रकट हो जाते हैं।

अभ्यासः

- **साहित्य**

प्र-2-श्लोकांशान् योजयत-

क	ख
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं	वचने का दरिद्रता।
गच्छन् पिपीलको याति	योजनानां शतान्यपि।
प्रियवाक्यप्रदानेन	सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
किं भवेत् तेन पाठेन	जीवने यो न सार्थकः।

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।

प्र-3-प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) सर्वे जन्तवः केन तुष्यन्ति?
उत्तर-सर्वे जन्तवः प्रियवाक्येनप्रदानेन तुष्यन्ति।

(ख) पिककाकयोः भेदः कता भवति?
उत्तर- पिककाकयोः भेदः वसंतसमये भवति।

(ग) कः गच्छन् योजनानां शातन्यपि याति?
उत्तर- पिपीलकः गच्छन् योजनानां शातन्यपि याति।

(घ) अस्माभिः किं वक्तव्यम्?
उत्तर-अस्माभिः प्रियं वक्तव्यम्।

प्र-4-उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं- 'न' इति लिखत-

(क) काकः कृष्णः न भवति।	न
(ख) अस्माभिः प्रियं वक्तव्यम्।	आम्
(ग) वसन्तसमये पिककाकयोः भेदः भवति।	आम्
(घ) वैनतेयः पशुः अस्ति।	न
(ङ) वचने दरिद्रता कर्त्तव्या।	आम्

➢ व्याकरण

प्र– ग्रन्थे कोकिलः गरुडः परिश्रमेण कथने

प्र–6–

वचने	<u>कथने</u>
वैनतेयः	<u>गरुडः</u>
पुस्तके	<u>ग्रन्थे</u>
रवेः	<u>सूर्यस्य</u>
पिकः	<u>कोकिलः</u>

विलोमपदानि योजयत-

- सार्थकः – निरर्थकः
- कृष्णः – श्वेतः
- अनुक्तम – उक्तमः
- गच्छति – आगच्छतिः
- जागृतस्य – सुप्तस्य